(1)

B.A. (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट - वन

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक) जी
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U)

Lecture - II

इतिमी (सप्रसंग व्याख्या):

"आयल वसन्त आयल वसन्त।
कुसुमित दिगन्त, सौरभ अनन्त।
लए मद फुलल, आयल वसन्त।"

प्रस्तुत पद्यांश कविवर उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' जी विरचित 'इतिमी' पोथीक 'वसन्त' शीर्षक सँ लेल गेल अछि।

ऋतुराज वसन्तक आगमनक होइते प्रकृति देवी प्रसन्न भऽ गेल छथि प्रकृति देवीक समस्त उपादानक अंग-अंगमे नव-ज्योति आ सजावट भरल आनन्द जगबैत वसन्त आएबाक सूचना दैत छथि। भ्रमरगण कुसुम-कुसुम रस मदिराक पानकऽ बौड़ायल अछि। वन देवी अपन प्रियतमकेँ रिझएबा लेल नाना-विध शृंगार करैत छथि। नव पत पाबि मदमातल भेल, कखन लाल, कखन हरियर पत पाबिकेँ अपन सौन्दर्यक निरीक्षण करैत छथि। नाना तरहक अलंकार धारण करैत छथि। कखनो कुसुम फुलक त कखनो आमक

(2)

मजरैत । अलंकृत भेल प्रिय मिलन हेतु चललीह । भ्रमर वृन्द मधुर वीणा बजाबैत छथि । कोइली मधुर गीतक गायनमे व्यस्त छथि । कण-कणमे वसन्तक आगमनसँ प्रशान्तता व्याप्त अछि । जन-जनमे हास्य-उमंगक उन्माद अछि।

"राजनीति-रत दलसभ बहुतो
जन कल्याणक गप्प हँकैत अछि
अपने लेल वा दल लेल सभ किछु
नोचि-खसोटि आब बैसैत अछि।।"

ई पाँती इतिजा(?) मे संग्रहित रचनाक शीर्षक 'प्रदर्शन आ वस्तुसत्य' सँ लेल गेल अछि। एहि कविताक माध्यमसँ कवि मानवताक पाठ पढ़ा लेल जन-जनसँ आग्रह क' रहलाह अछि। जे कोनो कुविचार कें छोड़ि कें अपन चरित्रक परिचय दैत छथि। ओ महापुरुष छथि सत्य कहल जाए ओ(?) सकैत छै। नवरत्न(?) पुरुषक आगाँ लोक प्रिय भ' लैत छथि। राजनीतिक लोकनि बहुतो लोक आ दल सभ नित्य प्रोजेक्ट(?) आश्वासन द' कें जन-जनकें ठकि रहल छथि। की जनता इनकर झूठ नहि बुझैत छथि? अवश्य लेकिन इनकर की हाल होयत। राजनीतिक बहानासँ लोकके ठकिकें धन लुटैत अछि से अपना लेल वा दलक लेल। पुनः ओहि धनकें नोचि-खसोटि कें खाइत अछि। समाजमे बाहुबलक(?) लोक पुनः ओहि धनकें नोचि-खसोटि कें खाइत अछि।

Sanjit Kumar(?)